व्यक्ति का पथ समाज की ओर

जीवन था इतना कठिन,
भूल गया था जीना,
पर मिली एक शक्ति अपना दर्द छुपाने का।
अपनी खुशियों को भुलाना सीखा।

दूसरों के जीवन संभालते,
हम अपना जीवन खो दिया,
चाहती हूँ, चाहती हूँ
जो खोया है उसे पाने।

पता नहीं, पता नहीं कभ
इच्छा पूरा होंगे, लेकिन
एक बात तो जरूर पता है
मैं विजय प्राप्त करूँगी।

कोई नहीं था सलाह देनेकेलिए,
कोई नहीं था हौंसला देनेकेलिए,

तनहाई महसूस हुई प्रलय किया था
जीना ज़रूर।

मरुस्थल सूखा होता है, पूरे साल
वो अपनी जीवन की प्रतीक्षा मे रहती है,
उस प्रतीक्षा का फल भी होता है,
वैसे मुझे भी मेरी जीवन मिलेगी।

हर दिन, हर दिन प्रतीक्षा से निकल गयी।
इस समाज की मर्मभेदी लोग मुझे देखे हँस लिया,
हौसला छूट गयी, पर लालसा बाकी था।
जीने का, मन में प्रतीक्षा की आग बाकी थी।

लेकिन वक्त मुझे समझाई
जिजीविषा है तो रास्ता भी दुनिया दिखाएगा।
अपनी दुनिया को मैं ने आँखें खोलकर देखा,
वहाँ थी मेरी सबसे बड़ी हौसला।

पेड़ इस दुनिया के ऊपर खिरा.
सारी जीवन गुजर गयी, लेकिन
एक चिड़िया की तरह इस दुनिया
आसमान की तारें की पास उनकी पंख से गई।

दूसरों की खुशी में अपनी मीमांसा
देखने की कोशिश की, पर
वो लोग मुझे उनकी जिंदगी से दूर
निकाला. अब मैं क्या करूँ?

रास्ता एक ही, नया इंनसान बनो,
उस जिंदगी सिर्फ अपनों केलिए नहीं.
इस समाज के हर लोग केलिए,
वहाँ मैं कभि अकेला नहीं होगा।

समाज को नया बनाना है मुझे।
नया बने समाज सबको रास्ता दिखाए,
सबको जीवन की मकसत दिखाए.

वो समाज की नई शुरुवाद हो जाऐ।

रास्ता बदचलन होगा, तनहाई सहना पड़ेगा,
लेकिन अंद में आपका विश्वास आपका
साथ देगा, व्यक्ति की जिंदगी समाज की
नवीकरण करेंगे तो, मानव वंश होगा खुश।

मैं, एक मामूली इंनसान,
इतना कुछ समझ गयी इस
दुनिया को देखें, तो इस दुनिया
की हर लोग ये समझ सकेगा।

एक छोटी सी दु:ख मन में था,
उस दु:ख की रास्ता में जब चला तो
मेरी जीवन की मक्सत मुझे मिली,
अब इस दुनिया को भी वो समझना है।

जानती हूँ, जानती हूँ की चरमसीमा मैं हूँ।

थे भी जानता हैं की सब में
जीतने का आग हैं, उस आग को,
भड़कने की नई शुरुवाद कीजिए ।

मानव के सबसे बड़ी ताकत अपना वंश हैं.
लेकिन आज की समाज एक दूसरे को दुश्मन
मानता हैं । नहीं, थे नहीं होना चाहिए,
मानव को समाज की गुप्त समझना चाहिए ।

समाज की गुप्त कुछ और नहीं. थे हैं
की सब एक हैं. सब परिवार हैं,
सुख, या दुःख सब साथ हैं ।
महात्मावों की पथ थे था ।

उनकी रह चलते हुए इस भारत
की मिट्टी में जनम लिया हम
उनसे चुने हुए पथ पकड़कर
इस समाज को नये रास्ता दिखाए ।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 641 Participant Code: 302

फँसे खड़ी हुई समाज।, रहे
कल की प्रतीक्षा में, नयी
जीवन की प्रतीक्षा में
नयी सोच की प्रतीक्षा में।

चलो, चलो बच्चों खोलो अपनी
आँखें कल की ओर, अपनी
आवाज़ उठालो तुम्हारी भविष्य
केलिए, नयी धर्म राज्य केलिए।

* * * * *

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)